

दुआ-36

जब बादल और बिजली को देखते और रउद की आवाज़ सुनते तो यह दुआ पढ़ते

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बारे इलाहा! यह (अब्र व बर्क) तेरी निशानियों में से दो निशानियाँ और तेरी खिदमतगुजारों में से दो खिदमतगुजार हैं जो नफ़ारसाँ रहमत या ज़रर रसाँ उकूबत के साथ तेरे हुक्म की बजाआवरी के लिये रवाँ दवाँ हैं। तो अब इनके ज़रिये ऐसी बारिश न बरसा जो ज़रर व ज़ेयाँ का बाएस हो और न उनकी वजह से हमें बला व मुसीबत का लिबास पहना। ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इन बादलों की मनफ़अत व बरकत हम पर नाज़िल कर और उनके ज़रर व आज़ार का रूख हमसे मोड़ दे और उनसे हमें कोई गज़न्द न पहुंचाना और न हमारे सामाने माशियत पर तबाही वारिद करना।

बारे इलाहा! अगर इन घटाओं को तूने बतौर अज़ाब भेजा है और बसूरते ग़ज़ब रवाना किया है तो फिर हम तेरे ग़ज़ब से तेरे ही दामन में पनाह के ख्वास्तगार हैं और अफ़ो व दरगुजर के लिये तेरे सामने गिड़गिड़ाकर सवाल करते हैं। तू मुशरिकों की जानिब अपने ग़ज़ब का रूख मोड़ दे और काफ़िरों पर आसियाए अज़ाब को गर्दिश दे।

ऐ अल्लाह! हमारे शहरों की खुशकसाली को सेराबी के ज़रिये दूर कर दे और हमारे दिल के वसवसों को रिज़क के वसीले से बरतरफ़ कर दे और अपनी बारगाह से हमारा रूख मोड़कर हमें दूसरों की तरफ़ मुतवज्जोह न फ़रमा और हम सबसे अपने एहसानात का सरचश्मा क़ता न कर। क्योंकि बेनियाज़ वही है जिसे तू बेनियाज़ करे और सालिम व महफूज़ वही है जिसकी तू निगेहदाशत करे। इसलिये के तेरे अलावा किसी के पास (मुसीबतों का) दफ़िया और किसी के हाँ तेरी सुतूत व हैबत से बचाव का सामान नहीं है। तू जिसकी निस्बत जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है और जिसके बारे में जो फ़ैसला करता है वह सादर कर देता है। तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं के तूने हमें मुसीबतों से महफूज़ रखा और तेरे ही लिये शुक्र है के तूने हमें नेमतें अता कीं। ऐसी हम्द जो तमाम हम्दगुजारों की हम्द को पीछे छोड़ दे। ऐसी हम्द जो खुदा के आसमान व ज़मीन की फ़िज़ाओं को छलका दे। इसलिये के तू बड़ी से बड़ी नेमतों का अता करने वाला और बड़े से बड़े इनामात का बख़शने वाला है मुख्तसर सी हम्द को भी कुबूल करने वाला और थोड़े से शुक्रिये की भी क़दर करने वाला है और एहसान करने वाला और बहुत नेकी करने वाला और साहबे करम व बख़िश है। तेरे अलावा कोई माबूद नहीं है और तेरी ही तरफ़ (हमारी) बाज़ग़शत है।